श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्

प्रणेता एवं अनुवादक
महेन्द्रशुक्ल 'शास्त्री'

प्रकाशिका
डॉ. माधवी पाण्डेय
रीडर — राजनीति विज्ञान
सा.बा.फु. राजकीय महाविद्यालय चकिया, चन्दौली

© डॉ. महेन्द्र शुक्ल

प्रति : ५००
मूल्य : रु. ५०/- मात्र

वितरक : ९४१५२८४५८४

मुद्रक : **इन्द्रा प्रिन्टर्स**
सी. २७/१७० ए, जगतगंज, वाराणसी
मोबाइल : ९९३५२९६९२३

टंकण : श्री राजकुमार जायसवाल

Srikrishnashahasranamamritam
by
Dr. Mahendra Shukla Shastri

पूज्यायै मात्रे

स्व० श्रीमती सहिजादी शुक्लायै

समर्पणम्

श्री कृष्णसहस्रनामामृतम् : एक झलक

विद्या जब विनम्रता के सदावरण से आवृत होती है, तो विद्वान् के वैदुष्य की दिव्यामा विकीर्ण होती है। विद्या और विनम्रता के साथ सदाचार की समन्विति व्यक्ति के जीवन में मंगलमयी तरंगें लहराती है तथा उक्त वैशिष्ट्य में अनुपम भवगद्भक्ति का मणिकाञ्चन योग उस अतिशय प्रतिभाशाली व्यक्ति के समग्र जीवन को ऐसा महिमा मण्डित करती है कि उसके सम्पर्क में आने वाले विद्वानों एवं उसके सद्ग्रंथों का अध्ययन करने वाले मनीषियों के आगामी जीवन में भी विलक्षण सात्विक संक्रामक प्रभाव परिलक्षित होने लगता है। इन पंक्तियों के लेखक को यह लिखते हुए सहज गौरवानुभूति हो रही है कि श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम् नामक ग्रंथ के प्रणेता श्रद्धेय डॉ. महेन्द्र शुक्ल जी इसी कोटि के वरेण्य विद्वान हैं। वस्तुत: शुक्ला जी ने इस ग्रंथ में परब्रह्म के अवतार लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण जी के एक सहस्र अपूर्ण नामों का संस्कृत के सुन्दर श्लोकों में चयन करके जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

'कृष्णभक्तस्य गति (मोक्ष) वर्णनम्' शीर्षकान्तर्गत ये श्लोक अतीव चित्ताकर्षक एवं प्रेरक हैं-

कृष्ण प्रियो भक्ति परायणश्च।
मायाविहीनो ममताद्यभावी।।
रात्रिं दिवं श्रीशयदारविन्दं
भजन्मुकुन्दस्य समेति मोक्षम्।।

पाठक ग्रंथ को पढ़ते-पढ़ते भगवद्भक्ति की पुनीत धारा में अवगाहन करने लगता है और भगवान् श्रीकृष्ण की अनुपमेय छटा का रसपान करता हुआ वह सरस श्लोकों का आनन्द प्राप्त करता है। ऐसी ही भावदशा में यह श्लोक स्मृत हो उठता है-

विद्यावन्तं महाशान्तं शंखचक्रगदाधरम।
रुक्मिणीरमणं भद्रंवन्दे गोपाल सौहृदम्।।

अन्त में संस्कृत के उद्भट् विद्वान एवं छन्दशास्त्र के मर्मज्ञ सुधी डॉ. शुक्ल जी के कृष्णपरक नव्य नामों से सम्बद्ध निम्नलिखित श्लोक भी इस आशय से उद्धृत हैं, जो पाठकों के लिए आनन्द प्रद ही नहीं मोक्षप्रद भी हैं। ग्रंथ के अध्ययन से मुझे जो दिव्यानुभूति हुई है, उसी आधार पर मैं आशान्वित हूँ कि सहृदय सुधी पाठकों को भी तद्वत् अनुभूति प्राप्त होगी।

लक्ष्मीकान्तं मनः कान्तं राधाबाहुविहारिणम्।
गोपिका ज्ञानदातारं दातारं सर्व सम्पदाम्।।
यमुनानन्दनं कन्दं देवकी दुःखदारकम्।
वसुदेवसुतं शीलं जगत्तारण कारणम्।।
सर्वहृद्वासिनं सत्यंगोपेश्वर रक्षकम्।
श्रीनिवासं भवरक्षं च वन्द्यं पावन पावनम्।।

डॉ. गिरिजाशंकर मिश्र
रीडर, हिन्दी विभाग
(अवकाशप्राप्त)

निवेदनम्

सकल वेदशास्त्रागमपुराणपारङ्गतानां गर्ग कुलावतंसानां महामहोपाध्यायानां पं० वायुनन्दन शुक्लानां तदात्मजानां प्रातः स्मरणीयानां पित्तृणां वासुदेवभक्तानां स्व. पं० रामवरणशुक्लानां कृपयैव ''श्री कृष्णसहस्त्रनामामृतम्'' नामकं भक्ति रसायनमथ च मोक्षसाधनं भक्तिकाव्यं सर्वजनसुखाय सर्वजनहिताय च प्रस्तौमि।

जन्म जन्मान्तरीय पुण्योदयेन भाग्योदयेन च मानव जन्म भवति।

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।।

यद्यपि पुराणेषु व्यासेन भगवतो बहूनि नामानि चोक्तानि। विष्णुसहस्त्रनाम, शिवसहस्त्रनाम रामसहस्त्रनाम च लोकेषु व्याप्तमेव। श्रीवासुदेव प्रसादतः श्रीकृष्णस्य सहस्त्र नामानि प्रलिख्य भक्तेभ्यः समर्पयामि। भक्ता मानवाश्च श्रीकृष्णनामोच्चारणं स्मारं स्मारं मोक्षं व्रजिष्यन्ति।

येषां हृदिश्यामल कृष्णा पादौ। वाणीषु राधारमणप्रिया च।।
सहस्त्रनाम स्मरणं सदैव । तेषां गतिर्नास्ति हि चिन्तनीया।।

पूर्व सञ्चित पुण्यात्मुकुन्द भक्तित्वाद्बाबाश्रयकृपाविन्दोर्महामहोपाध्याय वैयाकरण पारावारमनीषी मत्पितामह स्व. बाबू नन्दन शुक्लदया कणिकातः गर्ग कुलावतंस भारतीय संस्कृतसंस्कृतिविग्रह श्रुतिस्मृतिसरणिगन्तू राधाकृष्णभक्तिभ्रमरस्य जौनपुर जनपदान्तर्गत चकतरी (सुकुल की तरी) ग्राम निवासिनः काशीवासिनश्च कृपा प्रेरणादेः सूर्यशतकम्मया रचितमल्पकालेन।

ग्रन्थेऽस्मिन्निमे गर्गा अथ च सन्ततय अंशुमाला माधवी मनीषावनीश महेश्वर शुक्ला निर्विघ्नतायां सहाय्या अथ च लेखने स्वकान्तायाः सत्या शुक्लायाः महत्वपूर्ण भूमिकासीदिति नारायणं प्रस्तौतीतिदिक् । श्रीकृष्णसहस्त्रनामामृतम् इति रचनानन्तरं प्रफुल्लितमनसाहं भगवच्चरणारविन्दाश्रितेन मया लेखकेन स्व. पं. बाबूनन्दन शुक्ल महामहोपाध्याय पौत्रेण भगवच्चञ्चरीकेणानेक धर्म शास्त्र ग्रन्थ वेद पुराण श्रीमद्भागवतशुकशास्त्र पिपासुरामवरण शुक्लाचार्यपुत्रेण श्री राधाकृष्ण पदाब्जयोः कथा माध्यमेन चिन्तितेन बहोः कालान्तरं राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्राचार्योपाचार्येण श्री राधाप्रेरणया च श्रीकृष्णसहस्त्रनामामृतम् इति नामकं काव्यात्मकं संस्कृतभाषायां रचयित्वा पूर्वसञ्चित पुण्येन उक्त ग्रन्थस्य निर्माणं कृतम्। सर्वजन हिताय सर्व जन सुखाय एव एतद्ग्रन्थकंनिर्मितम्।

यद्यपि अनेके ग्रन्था वेद कालादारभ्येदानीं एतावत्पर्यन्तं महाकवि बाल्मीकि व्यास पराशर कविवर कालिदासाश्वघोष माघ भारवि प्रभृतिभिर्ग्रन्थादीनि महाकाव्यानि रचितानि तथापि मया पं० रामवरण शुक्ल बाबाजी इति राधामुकुन्दयोर्भक्त प्रेरणया हेलया च वाराणसेयसंस्कृत विश्वविद्यालयेऽध्ययनं सम्यक्कृत्वा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालयीय सेवाकाले विश्वविद्यालयऽध्यापकेन साकं विश्वविद्यालय व्याकरण विभागेऽ ध्यापकपदममलं कृतवान् १९७१-७२ ईसवीये व्याकरणाध्यापकपदे श्री बलरामोपाध्यायेन उपकुलपतिना व्याकरण पदं प्रदत्तमासीत् तदानीमेव संस्कृत श्लोकस्य निर्माणं समये कृतवानहम्, कार्यकारणवशाद्राजकीय पदं मिलितम् । रा.इ. कालेज पिठोरागढ़, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुरे अथ च सा.वा.फु. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चकिया वाराणसी स्थाने सेवां कुर्वन्नहं उक्त ग्रन्थानां रचनां सम्पादितवान्।

तदानीं डॉ. ओमकारनाथ श्रीवास्तव, डॉ. सतीश चन्द्र गुप्त, डॉ. वी.एम.एल. त्रिपाठी, प्रो. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. छोकरः, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी पद्मभूषण पदवीकः, डॉ. रामललित मिश्र, प्रो. अशोक कुमार मिश्र प्रभृतयोऽस्मद्रचनां पुरस्कारार्थं सूर्यशतकम्, माधवशतकम्, हनुमच्छतकम् च प्रेषितवान् पू. वि. वि. जौनपुर उ. प्र. तात्कालिक उपकुलपतिना प्रस्तोत्रा च मदीय काव्यानि स्व विश्वविद्यालय विद्वत्परिषदि परीक्ष्य दिल्लीं प्रेषितानि। भाग्याभाग्यवशादसफलोऽहम् किन्तु काव्यं अथ च कविर्नास्त्यसफलं तेषां विदुषां प्रतिदिनं काव्यं वर्द्धते कविश्च। भवतु नाम।

मन्मित्रेण डॉ. गिरीजाशङ्कर मिश्रेणोपाचार्येण सा. वा. फु. रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालयस्य प्रेरणा बह्वी प्रदत्ता सहजभावेन तस्मै चाशिषं ददामि, प्रैररयत्सदैव सः। सर्वाणि काव्यागत पद्यानि तेन पठितानि आशासे तेऽन्यानपि प्रेरको भूयादिति मे मतिः।

अस्मज्जेष्ठ भ्रात्रोः कमलाकर शुक्ल लालजिशुक्लयोः अ. प्रा. प्राध्यापकयोः कृपासीत् लेखने रूचिं सम्बर्द्धयन्मां प्रैरयत्। अथ च स्वपरिवाराणां महती कृपासीत् पुत्री अंशुमाला, माधवी, मनीषा प्रेरणा स्वरूपा मत्प्रिया सत्याप्यस्ति महायतामकरोत् । अस्मत्पुत्रद्वयेनावनीशशुक्ल महेश्वरशुक्लेन च प्रेरणं प्रदत्तम्।

श्रीकृष्णसहस्त्रनामामृतम् लिखित्वा स्वजन स्वजननीजनकाभ्यां सहजादि रामवर्णाभ्यां समर्पयन्नानन्दानुभूतिमनुभवामि मज्जन्म साफल्यं जातम्।

सर्वे कुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

एतच्छ्रीकृष्णसहस्त्रनामामृतं भक्तिकाव्यं स्मृत्वा पठित्वा च आनन्दानुभूतिं करिष्यन्ति भक्ताः। किं वहुनोक्तेन श्रीकृष्णस्य नामोच्चारणं मोक्षप्रदं भवति। मदीय जन्म सफलं जातं आशासे सर्वेभ्यो हितकरं भूयात् राधा कृष्णपादारविन्दे समर्प्य विरमामि।

गंगा दशहरा पर्व
स्थानम्
गोमती तटम्
राधा कुटीर

महेन्द्र शुक्ल

डॉ. महेन्द्र शुक्ल शास्त्री

परिशिष्ट

मेरे परमप्रिय पूज्य पिता डॉ. महेन्द्र शुक्ल अवकाश प्राप्त उपाचार्य, (राजकीय सेवा उ.प्र.) काशी के प्रकाण्ड वैयाकरणिक, ज्योतिर्विद एवं संस्कृत कवियों में से एक हैं। उनके व्यक्तित्व का एक सबसे बड़ा अंश ये है कि वे लोकैषणा, वित्तैषणा में विश्वास न करके भगवद्भक्ति में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, अपने दिनचर्या का एक बड़ा भाग भगवद्भक्ति एवं संस्कृत काव्य रचना करने में व्यतीत करते हैं, यही कारण है कि अपने जीवन का ६५ वर्ष व्यतीत करने उपरान्त भी वे प्रकाश में न आ सके, न ही उनकी कृतियाँ प्रकाशित हुई, यद्यपि इस अवधि में वे अनेक काव्य, महाकाव्य, शतकों एवं मौलिक शोध कार्यों को करके 'संस्कृत जगत' को अपनी सेवा देते रहे। सन् २००५ में उनकी ३०६ श्लोकों की रचना 'भक्तिशतकत्रयम' के नाम से प्रकाशित हुई, इसके अन्तर्गत सूर्य, माधव, हनुमान विषयक रचनायें हैं, ये सभी श्लोक अत्यन्त सुन्दर एवं भक्तिभाव से पूर्ण हैं, वर्तमान समय में 'संस्कृत जगत' में अमौलिक संस्कृत कृतियों के बीच उनकी काव्य रचना संस्कृत के आलोचकों के मध्य आन्तरिक प्रशंसा किन्तु वाचिक उपेक्षा दोनों से अभिभूत है, सारस्वत प्रतिभा से परिपक्व, एक सहृदय विद्वान् का कहना है 'डॉ. शुक्लः मूलतः कविर्नास्ति अपितु भक्तोस्ति। अतएव तत्कृते काव्यं कविप्रतिभाया प्रकर्षः नावलोक्यते अपितु भक्ति प्रधानं व्यासविजृम्भितं संकीर्तनं एक दरीदृश्यते' यहाँ मैं यही कहना चाहूँगी कि भले ही डॉ. महेन्द्र शुक्ल भक्त हों, कवि न हों किन्तु राधा के आराध्य श्रीकृष्ण के सहस्रनाम विषयक 'श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्' काव्य, ३३ सर्ग का 'शिवायनम्' नामक महाकाव्य, सूर्यशतकम्, माधवशतकम्,हनुमच्छतकम्, विविधा, स्तवाञ्जलिः, गोमतीयंकाव्यम् आदि की काव्य साधना किसने की? संस्कृत जगत को ये सारे काव्य एवं 'व्याकरणस्य दर्शनत्वम्' नामक गद्य संस्कृत ग्रन्थ किसने दिया? यदि इतने सारे मौलिक कार्य करने के उपरान्त भी मेरे पूज्य पिता 'कवि' नहीं है तो मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मेरे पिता

डॉ. महेन्द्र शुक्ल 'कवि' नहीं हैं, यदि वे मात्र 'भक्त' हैं तो मैं चाहूँगी आने वाले अनेकानेक वर्षों में संस्कृत साधक मात्र 'भक्त' के रूप में ही संस्कृत मौलिक श्लोकों की रचना करे, 'कवि' के रूप नहीं। आदरणीय पिताजी जब श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम् की श्लोक रचना कर रहे थे, तो वे प्रति दिवस इसके श्लोकों को अपने परमप्रिय जामाता डॉ. विवेक पाण्डेय, जो संस्कृत के विद्वान् एवं प्रवक्त भी हैं, उन्हें इसके श्लोक सुनाया करते थे, यद्यपि पिताजी कृष्ण के नाम पर आधारित काव्य-निर्माण कर रहे थे, किन्तु पिताजी ने एक हजार नाम वर्णन करने के विषय में चिन्तन नहीं किया था। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, ''बच्ची! विवेक जी कह रहे कि बाबूजी आप कृष्ण के एक हजार नाम को पूर्ण करके ही काव्य की सम्पूर्ति कीजिए, जिससे यह काव्य 'श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्' के नाम से प्रचलित हो सके।'' आज पिताजी का यह काव्य 'विष्णुसहस्रनाम्' के साथ जो साम्यता प्राप्त कर रहा है एवं 'श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्' के नाम से आप सभी के सम्मुख उपस्थित है, इसके पीछे डॉ. विवेक पाण्डेय जी की अमूल्य प्रेरणा का योगदान है।

काव्य सरस्वती का तत्व है कवि तो मात्र उसका रचयिता होता है और उस काव्य का विचारक सहृदय (या हम उसे अनुशीलनकर्त्ता कहें तो भी उचित होगा) होता है। कवि एवं सहृदय का यदि अस्तित्व है तो उसका एक साधार कारण हम काव्य को ही मान सकते हैं।

'काव्ये रसयिता सर्वो न बोद्धा न नियोगभाक्' अर्थात् काव्य में रस लेने वाले सभी हो जाते हैं पर उसे जानने वाला एवं आज्ञा मानने वाला नहीं होता।

काव्य का विषय आते ही मुझे एक बात अवश्यमेव ही समझ में आती है कि सहृदय पाठक अथवा जिज्ञासु काव्यमन के दर्पण में वर्णित वस्तु के साथ तन्मय हो जाते हैं एवं काव्य का रसास्वादन करते हैं। क्योंकि बिना तन्मयता के एवं बिना सहृदयता के कोई भी काव्य बोधगम्य नहीं होता, आनन्द नहीं देता। सहृदय कौन है? यह भी एक विचारणीय प्रश्न

है। मैं यहाँ यही कह सकती हूँ कि समान हृदय ही सहृदय होता है, और वही सहृदय काव्य को पढ़ते हुए वर्णनीय वस्तु के साथ तन्मय होकर आनन्दित होता है इसे (काव्य को) मैं हृदय का संवाद भी मानती हूँ जो एक हृदय से दूसरे हृदय तक पहुँचने के लिए माध्यम ढूँढ़ता है जिसका माध्यम या निवास हम सहृदयी को ही मान सकते हैं।

श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम् भक्ति काव्य है एवं इसे भजन करन वाले जन सहृदय ही हैं एवं कालान्तर में होंगे। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा भी है (काव्ये रसयिता सर्वो न बोद्धा न नियोगभाक्) कि काव्य में रस लेने वाले सभी हो जाते हैं पर उसे जानने वाला एवं आज्ञा मानने वाला नहीं होता, तो इसके लिखने के पीछे हमारी यहाँ एक ही भावना है कि हम श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्, काव्य को मात्र रस लेने की ही दृष्टि से न पढ़े अपितु, उसे जानने एवं आज्ञा मानने की दृष्टि से भी आत्मसात करें।

ईश्वर की आराधना से बढ़कर कुछ भी नहीं है। श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम् के श्लोक न केवल काव्य रसास्वादन कराते हैं अपितु विभिन्न जिज्ञासाओं के शमन के साथ ही हमारे लिए कल्याणकारी भी हैं।

'श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्' को हम साधु काव्य[१] की श्रेणी में भी रख सकते हैं। इस काव्य के अध्ययन, भजन, कीर्तन से सहृदय भक्त, विद्वान्, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं कलाओं में कुशलता तथा कीर्ति एवं प्रीतिफल प्राप्त करेंगे।

जहाँ तक आलोचना की बात है तो स्वर्ग में पहुँचा हुआ सत्काव्य भी आलोचकों की दृष्टि से अछूता नहीं है। किन्तु सत्काव्य निर्माण रूपी सत्कर्म करने वाला विद्वान् कवि एवं उसके सुन्दर काव्य का शरीर सहृदयों के हृदय में सदैव सुरक्षित रहेगा, सहृदय उसका सदैव आस्वादन करेंगे, भजन करेंगे।

---

१. धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम्।।

श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम् से मेरा लगाव उस समय से जब इसके हर श्लोक के निर्माण के उपरान्त इसे मैंने पढ़ा है गाया है, इसके टंकण एवं शोधन कार्य का जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ उसके लिए मैं अपने बड़ों, परिवारीय जनों की सदैव आभारी रहूँगी, मेरा मानना है कि इस मूढ़ अवस्था में उन्होंने मुझे इस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया। इस काव्य के एक-एक श्लोक अर्थ सहित मैंने अनेक बार पढ़ें हैं, और यही पाया कि कवि की लेखनी जब भी कुछ लिखती है निरर्थक नहीं लिखती, किसी प्रशंसा हेतु नहीं लिखती, पर यह हमारा दायित्व है कि यदि काव्य सराहना के योग्य हों तो हम उन्हें मुक्त कण्ठ से सराहें। मैं मुक्त कण्ठ से 'श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्' को वर्तमान कालीन काव्यों की श्रेणी में श्रेष्ठ काव्य मानती हूँ। क्योंकि आज जहाँ स्वच्छन्द काव्यों का प्रचलन बढ़ा है, अमौलिक कृतियों की भीड़ बढ़ी है वहाँ 'श्रीकृष्णसहस्रनामामृतम्' अपनी मौलिकता एवं भक्तिरस प्राधान्यता के कारण अन्य संस्कृत काव्यों से हटकर है एवं यह काव्य आधुनिक युग के अनेक संस्कृत काव्यों से श्रेष्ठ है। यह काव्य श्रवण, कीर्तन, अध्ययन करने वालों के लिए आने वाले अनेकानेक वर्षों में उपयोगी होगा।

मैं अपने पिताजी की कुछ प्रकाशनाधीन कृतियों के सन्दर्भ में भी आपको अवगत कराना चाहूँगी। व्याकरणस्य दर्शनत्वम् यह कवि (डॉ. महेन्द्र शुक्ल) का शोध प्रबन्ध है। इसका कुछ अंश प्रस्तुत है—

व्याकरणं यद्यपि मुख्यतया शब्दानामन्वाख्याकं शास्त्रम्। शब्दनिष्ठस्य साधुत्वस्य बोधनमेवास्य मुख्यं लक्ष्यम्। तथापि इदं शास्त्रं दर्शनशास्त्राणां पङ्क्तावपि उपवेशयितुं शक्यते। यतो दार्शनिकानामपि (दर्शनाशास्त्रीयाणाम्) तत्वानां लभ्यन्ते भूयांसः सङ्केता इह शास्त्रे ते च निबन्धेऽस्मिन्तत्र तत्र प्रकरणे प्रकाशमायास्यन्ति। अस्य हि शास्त्रस्य मोक्षोपयात्वं वर्णितं वाक्यपदीय कृता, ध्वनितञ्च महाभाष्यकृतापि। एतदेव दृश्यतामस्य मुख्यं दार्शनिकं तत्वम्। एतच्चैतन्निबन्ध शेषे व्याकरणदर्शने मोक्षस्तदुपायश्चेति

प्रकरणे दर्शयिष्यते। किं बहुना वाक्यपदीय कृता स्फुटमेवास्य दर्शनत्वमुक्तम् यल्लिखति सः द्वितीयकाण्ड शेषे-

''न्याय प्रस्थान मार्गस्तानभ्यस्य स्वं च दर्शनम्।
प्रणीतो गुरुणास्माकमयमागम संग्रहः।।''[१]

''अभ्यस्य स्वंचदर्शनम्'' अत्र स्वं दर्शनमित्यस्य व्याकरणदर्शनमित्यर्थः। अपि च-

''भिन्नं दर्शनामाश्रित्यं'' इति वदतापि एतेन व्याकरणस्य दर्शनत्वं सूचितम्। अन्यथोक्तकारिकायां भिन्नमिति व्यर्थमेव स्यात्। एवं वैयाकरण भूषणसारकृता श्री कौण्डभट्टेनापि अस्य शास्त्रस्य दर्शनत्वमूरीकृतम्। यदलिखत् सः—

''अथ दर्शनान्तरीय रीत्या व्यापारस्य धात्वर्थत्वाभावा तत्र लकारविधिः स्यादिति चेत् तर्हि कृतामपि कर्तृकर्म्मादि वाचित्वं न सिद्धयेत् ''कर्तरिकृत'' इति च ''लः कर्मणि'' इत्यनेन तुल्य योगक्षेमम्[२] इति। अत्र ''दर्शनान्तरीय रीत्यैत्यनेन'' व्याकरणस्यापि दर्शनत्वं सङ्केत्यते। सर्वदर्शनसंग्रहे[३] दर्शनान्तरैः सह पाणिनीय—दर्शनमपि उपस्थापयन् माधवाचार्योऽपि पाणिनीय शास्त्रस्य दर्शनत्वमिच्छति। अस्माकमप्यत्र व्याकरणमिति पाणिनीय शास्त्रमेवाभिप्रेतम्। एतेनेदं स्पष्टं यत् केवलं दर्शन पदीया योग शक्तिंव्याकरण शास्त्रं संघटते इति कृत्वैव नास्माभिरस्य दर्शनत्वमास्थीयते। अपि तु दर्शनपदस्य रूढ़िरप्यस्त्यस्मिन् शास्त्रे या वाक्यपदीयकारादीनां वचनैरनुपदमेव स्पष्टी कृतेत्यालोच्य।

गोमतीयं काव्यम्– इस काव्य के अन्तर्गत नदीतट गोमती एवं ग्राम (शुक्ल की तरी, जो कवि का जन्म स्थान भी है) की प्राकृतिक सुषमा का अत्यन्त सरस वर्णन है। इसमें कवि (डॉ. महेन्द्र शुक्ल) ने अपने पूर्वजों का भी उल्लेख किय है जो प्राचीन काल में संस्कृत को मूर्धन्य विद्वान् हुए,

१. वा.प. २.४९० ॥
३. वै.मू.सा.-कारि. धात्वर्थ निरूपणम्। पृ.सं. १७-१८॥
३. स.द.स. - पा.द.

जिन्होंने काशी, मथुरा, प्रयाग, अयोध्या इत्यादि विविध भारत वर्ष की नगरियों को अपने वैदुष्य से सुशोभित किया। कुछ श्लोकों का आस्वादन करें—

भ्रमन्तिगावो बहुवत्सयुक्ताः। स्वस्थाश्च बालाः सततं तटान्ते।।
सधेनुपा यष्टिकराश्च यत्र। सुगोमती सा परमा नदीमे।।१।।
सरेणुकाः कोमल नीरयुक्ताः। चूतान्मधूकान्वि विधान्मनोज्ञान्।।
धुनोति वायुर्महनीय वृक्षान्। सुगोमती सा परमा नदीमे।।२।।
स पुष्प वारीति परं मनोज्ञं। दिव्यं यशस्कं शुभदं हि लोके।।
वहत्त्विदं कान्त वपुर्मनोज्ञकं। सुगोमती सा परमा नदीमे।।३।।
सपादपा षण्डयुता मनोरमाः। दिव्याङ्गनाश्शुक्लवधूश्च सर्वा।।
प्रभातकाले निगदन्ति गीतं। सुगोमती सा परमा नदीमे।।४।।
प्रभातकाले तरिवाहकाः सदा। नद्यां विकर्षन्तिदिने च नौकाम्।।
मनोरमा मत्स्य युतानिनादिनी। सुगोमती सा परमा नदीमे।।५।।

शिवायनम्- इसके अन्तर्गत भगवान शिव की आराधना की गई है। इसे देखें—

मृडानीशङ्करौवन्दे सुन्दरं लोककारणम्।।
मयूरवाहनं चादौ भव्यं विघ्नविनाशनम्।।१।।

ध्येयं पन्नगभूषणं शिवहरं मन्दार पुष्पप्रियं।
दिव्यं देवनदी जटाविहरणं गौर्य्याः सदामानदम्।।
कैलाशे शिखरे मनोहरवने भव्यं सदावासनं।
वन्देऽहं सुखदं शिवाविलसनं काशीपतिं शङ्करम्।।२।।

वन्देऽहं सुरदीर्घिकाविलसनं संसिक्त भालं शिवं।
वामाङ्कोनल्लसिता सदाशुभकरी गौरी परा पावनी।।
यस्याग्रे च विराजते गणपतिः शुण्डाद्वयीसुन्दरः।
कण्ठे पन्नग पंक्तयः शशिकला भाले शुभा मङ्गला।।३।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं गणपति पितरं पन्नगालङकृतम्वं।
गौरीशं नीलकण्ठं सुरसरिरमणं काशिका सम्प्रवासम्।।
भस्माङ्गं भस्मभूषं मृगपतिवसनं पार्वती सङ्गलिप्तं।
क्रोडे स्कन्दं वरिष्ठं शिशुवर सुखदं क्रीडनैःक्रीडयन्तम्।।४।।

स्तवाञ्जलिः– इसके अन्तर्गत विभिन्न देवों की स्तुतियों का संग्रह है। यह रचना विविध छन्दों में की गई है। इसके अन्तर्गत देवी काली की स्तुति 'कालिकाष्टक' नाम से है, इसे देखें—

सुवासिनीं शिवप्रियां। सुकेशिनीञ्च कामदाम्।।
महेश्वरीं सुमालिकां। नमामि कालिकां पराम्।।१।।
सुभिन्दिपाल धारिणीं। सुखड्गधारिणीं सदा।।
कराब्जमालिकां रमां। नमामि कालिकां पराम्।।२।।
अजस्त्र भर्गपुञ्जिकां। प्रशान्त हास्य हासिनीम्।।
प्रचण्ड रूप धारिणीं। नमामि कालिकां पराम्।।३।।
निशुम्भशुम्भनाशिनीं । मधून्मदाञ्च मर्दिनीम्।।
कुसैरिभस्य मर्दिनीं। नमामि कालिकां पराम्।।४।।
शुभां शिवांच भद्रिकां। प्रसन्नमानसां त्वजाम्।।
भजेऽप्रमेय वैभवां। नमामि कालिकां पराम्।।५।।
सुरेश दुःखदारिणीं। जनेश कष्ट कर्तिनीम्।।
भवेशमान वर्द्धिनीं। नमामि कालिकां पराम्।।६।।
चतुर्मुखप्रपूजितां। प्रफुल्ल लास्य कारिणीम्।।
चराचरौ च रक्षिणीं। नमामि कालिकां पराम्।।७।।
समस्त ज्ञान दायिनीं। मुकुन्ददेव धारिणीम् ।।
समस्त विद्यायावृतां। नमाम्हंञ्च कालिकाम्।।८।।
काल्यष्टकमिदं पुण्यं। यः पठेत्कालि मन्दिरे।।
सर्वविद्याभवेत्तस्य। महाकालि प्रसादतः।।९।।

विविधा : इसके अन्तर्गत ऋतुवर्णन, विवाहमङ्गलगान, स्वतन्त्रतादिवस वर्णन, गणतन्त्रदिवस वर्णन, नववर्ष वर्णन, कामिनीवर्णन, घटनावर्णन, इत्यादि विषयक श्लोक हैं। इन रचनाओं के माध्यम से विभिन्न छन्दों, अलङ्कारों, रसों का आस्वादन सहृदय पाठक अवश्यमेव करेंगे। वसन्तपञ्चमीवर्णन देखें—

शिशिरकालगतं बहुकष्टदं। श्रृणु हरे! कुसुमाकरस्वागतम्।।
तव यशो विमलं परिकीर्त्यते। अयि सखे! ब्रज माधव रक्षमाम्।।१।।

तवकथां विमलामति बुद्धिदां। सकल लोक जनेषुप्रथीयसीम्।।
विपुलचन्द्र कलामिव काशिनीं। मधुरवागपि गायति शारदा।।२।।
सरस कोमलकान्त सुखावहां। मतिमताञ्च सुखादिकदायिनीम्।।
सकलमानस दुःख विदारिणीं। श्रृणुत मानवराग विकर्तिनीम्।।३।।
सुर दिनेश महेश सुधाकरः। प्रतिदिनञ्च नमन्तिभ्रमन्ति च।।
तव कथाञ्च पिवन्ति मुहुर्मुहुः। चिरवपुश्च सदैव विलोक्यते।।४।।
अयि विभो! स्मरणं तव सर्वदा। भवतु मे विमले हृदिसन्निधौ।।
यदपि त्वं मम मानस गुह्यके। वससि माधव सर्वगुहाशये।।५।।

मेरा जीवन आज सार्थक मानती हूँ कि परमपूज्य पिताजी के काव्य आपके समक्ष आ पा रहे हैं अब आप अध्ययन, भजन, कीर्तन करने वालों का दायित्व है कि इसे अपने हृदय में जीवित रखें।

अन्त में मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि जिस पिता ने (डॉ. महेन्द्र शुक्ल) मुझे संस्कृत शिक्षा दी इतने अतुलनीय अमूल्य काव्यरत्न के टंकण एवं शोधन कार्य के साथ इसके रसास्वादन का अवसर प्रदान किया, वे दीर्घायु हों, उनकी अन्य कृतियाँ शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित हों एवं लौकिक प्रशंसा के अनेकानेक आधारों (पुरस्कार) को भी प्राप्त करें।

प्रस्तुति— **डॉ. मनीषा शुक्ला**
महिला अध्ययन एवं विकास केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय